लोकप्रियसाहित्यग्रन्थमाला-84

पालि शास्त्र और बौद्ध दर्शन के विकास में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का योगदान

प्रधान सम्पादक
प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री
कुलपति

संपादक
आचार्य संघसेन

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)
नवदेहली

संपादकीय

महापंडित राहुल सांकृत्यायन प्रतिष्ठान, दिल्ली ने २००९ ईसवी वर्ष में एक एक-दिनी संगोष्ठी (सेमिनार) आयोजित की थी और विषय रखा था 'पालि साहित्य और बौद्ध दर्शन में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का योगदान'। संगोष्ठी को आशातीत सफलता मिली थी। विद्वान सहभागी अपने अपने पेपर (शोध-पत्र) लेकर इतनी बड़ी संख्या में पहुँचे थे कि उन सबके पेपरों को समाहित करना संभव न हो सका। स्थानीय सहभागियों की संख्या पूरी थी।

संगोष्ठी पर विस्तृत रिपोर्ट, उससे संबन्धित विविध विवरण और उसमें प्रस्तुत किये गये चर्चित व अचर्चित आलेखों का संकलन प्रस्तुत किया जा रहा है। इसका प्रमुख उद्देश्य है, संगोष्ठी के सन्देश को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना। खास कर उन तक जो संगोष्ठी में उपस्थित न हो सके।

संकलन को चार खंडों में रखा गया है – प्रथम खंड (संस्थागत विवरणों का संग्रह और एकदिनी संगोष्ठी (२१ नवंबर २००९) के विवरण), द्वितीय खंड (अंग्रेजी में पठित और चर्चित आलेखों का संग्रह), तृतीय खंड (हिन्दी में पठित और चर्चित आलेखों का संग्रह) और चतुर्थ खंड में दो परिशिष्ट जोड़े गये हैं (प्रथम परिशिष्ट–संगोष्ठी में पठित, किन्तु अचर्चित आलेखों का संग्रह; द्वितीय परिशिष्ट–राहुल संकिच्चानावदानं (पालि भाषा में रचित खंडकाव्य का निदान (प्रस्तावना) परिवर्त मात्र)।

संकलन के प्रारंभ में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का जीवन वृत्त और उनके नाम पर बने प्रतिष्ठान का विस्तृत परिचय दिया गया है। उसके बाद संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र का विवरण प्रस्तुत किया गया है,

विषयानुक्रम

पृष्ठ.

पुरोवाक् – आचार्य परमेश्वरनारायणशास्त्री *iii*
कुलपति, रा.सं. संस्थान, नवदेहली

संपादकीय – आचार्य संघसेन, संपादक *v*

प्रथम खण्ड

(एकदिनी संगोष्ठी के विषय में)

1. महापंडित राहुल सांकृत्यायन (जीवनी) 3
–आचार्य अनिल कुमार पांडेय, सचिव

2. म.प. राहुल सांकृत्यायन प्रतिष्ठान (एक परिचय) 10
–आचार्य अनिल कुमार पांडेय, सचिव

3. उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय भाषण 21
–आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी, कुलपति

4. Keynote Address (बीज भाषण) 27
–आचार्य सुनीति कुमार पाठक
पूर्व-अध्यक्ष, इंडो-तिब्बती विभाग,
विश्व भारती, शान्ति निकेतन (प.ब.)

5. समापन-भाषण 33
–डॉ. सुधारानी पांडेय, कुलपति,
उत्तराखंड संस्कृत विश्वविद्यालय,
हरिद्वार (उत्तराखंड)

तृतीय खण्ड

(हिन्दी में पठित व चर्चित आलेखों का संग्रह)

15. वर्तमान भारत में बौद्ध धर्म और पालि की स्थिति और प्रासंगिकता 163
—आचार्य अंगने लाल, पूर्व कुलपति
रा.म.लो. विश्वविद्यालय, फैजाबाद, (उ०प्र०)

16. म.प. राहुल सांकृत्यायन का पालि साहित्य में योगदान 168
—आचार्य प्रद्युम्न दूबे

17. भारत में बौद्ध धर्म-दर्शन की स्थिति और प्रासंगिकता 185
—आचार्य रमेश कुमार द्विवेदी

18. बौद्ध दर्शन की वर्तमान स्थिति एवं उसकी प्रासंगिकता 194
—आचार्य विजय कुमार जैन

19. भारत में बौद्ध धर्म दर्शन के पुनरुज्जीवन में म.प. राहुल सांकृत्यायन का योगदान 203
—आचार्य सत्यदेव कौशिक

20. उत्तरप्रदेश में पालि भाषा एवं साहित्य के अध्ययन की वर्तमान स्थिति एवं संभावनायें 212
—डॉ. हर प्रसाद दीक्षित

21. पालि भाषा और साहित्य के अध्ययन के विकास में म.प. राहुल सांकृत्यायन का योगदान 224
—डॉ. विमल कीर्ति

22. भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों में पालि एवं बौद्ध अध्ययन : एक सर्वेक्षण 239
—डॉ. राजेश रंजन

6. समापन-सत्र का अध्यक्षीय भाषण 45
—आचार्य मैनेजर पांडेय, अध्यक्ष, म.प. राहुल सांकृत्यायन प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

7. कृतज्ञता-ज्ञापन —आचार्य संघसेन, मुख्य संयोजक, संपादक 51

द्वितीय खण्ड

(अंग्रेजी में पठित व चर्चित आलेखों का संग्रह)

8. Tipiṭakācariya Rahula Sankrityayana : A Study on His Contribution to Pali and Buddhist Studies 55
— Prof. Deepak Kumar Barua

9. Present Status and Relevance of Buddhist Philosohy in India 67
— Prof. C.D. Naik

10. Rahul Sankrityayana : An Erudite Buddhist Scholar 97
— Prof. Bela Bhattacharya

11. Contribution of Rahul Sankrityayana in the Development of Pali Literature 105
— Prof. Bimlendra Kumar

12. The Temporal Origin of Pali Language: A Fresh Interpretation 115
—Prof. Ram Nandan Singh

13. Contribution of Pandit Rahul Sankrityayana to Buddhist Literature 120
— Dr. C. Upender Rao

14. Recent Development in Pali and Buddhist Studies Outside India 124
— Dr. Siddharth Singh

23. बौद्ध विद्या को म.प. राहुल सांकृत्यायन का योगदान 248
—आचार्य संघसेन

24. बौद्ध परंपरा को म.प. राहुल सांकृत्यायन का अवदान 266
—डॉ. प्रफुल्ल गडपाल

चतुर्थ खण्ड

प्रथम परिशिष्ट :

(संगोष्ठी में पठित किन्तु अचर्चित आलेखों का संग्रह)

25. आधुनिक हिन्दी साहित्य पर बौद्धधर्म-दर्शन का प्रभाव 293
—प्रांशु समदर्शी

26. पाली भाषा और साहित्य के अध्ययन की वर्तमान स्थिति 300
—अशोक बदलादन ऊके

27. बौद्ध धम्म के विकास में राहुल सांकृत्यायन का योगदान 308
—सरवदे अशोक पांडुरंग

28. पालि साहित्य को म.प. राहुल सांकृत्यायन जी का योगदान 312
—भिक्खु एम. सत्यपाल

द्वितीय परिशिष्ट :

29. राहुल संकिच्चानावदानं 319
-सेतलो संघसेनो

30. संगोष्ठी के वक्ताओं/लेखकों की सूची 331

समापन-भाषण

पालिसाहित्य और बौद्धदर्शन के अध्ययन में महापंडित राहुल सांकृत्यायन का योगदान

डॉ. सुधा रानी पाण्डे

महापंडित राहुल सांकृत्यायन प्रतिष्ठान एवं राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के संयुक्त प्रयासों से आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पधारे विद्वज्जनों का हार्दिक अभिनन्दन करते हुए मैं कृतज्ञता ज्ञापित करना अपना कर्तव्य समझती हूं कि आपने मुझे इस सारस्वत कार्यक्रम में आमंत्रित कर महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अवदान विषयक संदर्भों पर वक्तव्य देने का अवसर प्रदान किया है। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान एवं इसके विद्वान कुलपति इस अर्थ में विशेष साधुवाद के पात्र हैं कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा पालि प्राकृत भाषाओं के संरक्षण, संवर्धन एवं साहित्य के नवीन आयामों की अन्वेषणा हेतु अपेक्षित योगदान प्रस्तुत करने के लिये निरन्तर प्रतिबद्ध हैं। मैं इस स्तुत्य कार्य के लिए संगोष्ठी आयोजक, प्रतिष्ठान एवं प्रायोजक संस्थान को हार्दिक बधाई देती हूं। जिन विषयों पर प्रातःकालीन सत्रों में विमर्श किया गया है, वे निश्चय ही वर्तमान समय के सन्दर्भों में पालि भाषा और अध्ययन, बौद्धधर्मदर्शन के विविध प्रसंगों के सार्थक निष्कर्ष प्रस्तुत करने में उपयोगी सिद्ध होंगे।

मराठी की एक कविता का मुझे स्मरण आता है, जिसका भाव यह है कि 'यहां चारुता स्थिर नही है मैं क्यों कोई गृह बना दूं? मैं उस चारु गंभीरता को खोजते हुए सारी पृथ्वी पर सदा घूमता

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

(भारतशासन-मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः,
राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058

दूरभाष : 011-28524993, 28521994, 28520977

email : rsks@nda.vsnl.net.in
website : www.sanskrit.nic.in

(राष्ट्रियमूल्याङ्कन-प्रत्यायनपरिषदा 'ए'-श्रेण्या प्रत्यायितः मानितविश्वविद्यालयः)

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी, नवदेहली-110058

दूरभाष : 011-28524993, 28521994, 28520977

email : rsks@nda.vsnl.net.in

website : www.sanskrit.nic.in